Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies

ISSN(Online): 2945-3658

Volume- 04| Issue- 02| 2025

Review Article **Received:** 12-01-2025 | **Accepted:** 11-02-2025 | **Published:** 28-02-2025

रविदासिया समाज का ऐतिहासिक अध्ययन

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोशिएट प्रोफैसर हिन्दी- विभागाध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर।

Abstract: यह शोध-पत्र रविदासिया समाज के ऐतिहासिक विकास, उत्पत्ति, जातीय संरचना और धार्मिक चेतना का विश्लेषण करता है। इसमें यह बताया गया है कि किस प्रकार गुरु रविदास जी की विचारधारा ने चमार समुदाय को सामाजिक, धार्मिक और आत्मिक स्तर पर जागरूक किया और उन्हें एक संगठित पहचान दी। 'रविदासिया धर्म' के माध्यम से यह समाज जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर सम्मानपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर हुआ.

Keywords: रविदासिया समाज, जातीय चेतना, सामाजिक पुनरुत्थान.

प्रस्तावना

'रविदसिया' शब्द की पृष्ठ भूमि

बहुत सारी किवदंतिओं के अनुसार ब्रह्मा के बाद जब उनके वंश के लोगों ने वंशावली चलाई तब 52वीं पीढ़ी में आकर शूद्र पीढ़ी की गणना की जाती है,पर लगता है कि पीढ़ी का यह क्रम शुद्ध नहीं है,यह पीढ़ी कुछ और पीछे जा सकती है । हालांकि कि यह पीढ़ी-विवाद का विषय नहीं है,परंतु यह मान लेना भी उचित नहीं होगा कि यहीं से चमारों अर्थात रविदसिया समाज के इतिहास का आरंभ हुआ होगा ।ऋग्वेद में दसराज युद्ध का वर्णन है । यहाँ इन राजाओं के सामने राजा सुदास हार जाते हैं । राजा सुदास की पराजय के बाद जो उनके जो वंशज हूए,वे हैं चमार अर्थात आधुनिक रविदासिए।

'चमार' शब्द की यदि व्याख्या करते हैं तो इस प्रकार बनती है -
च- चर्म
म- मास
आ- अस्थि
र- रक्त

अर्थात पूर्णमानव की जाति चमार है परंतु मनुस्मृति में चमड़े का व्यवसाय करने वालों को चमार जाति से जोड़ दिया गया ।'चमार'अथवा 'रविदास'जाति भारत की मूल जाति है । इस समाज के संबंध मेंएच.एच. रिशले ने अपनी पुस्तक 'पिपुल्स आफ़ इंडिया'में लिखा है –

करिया ब्राह्मण, गोरा चमार ।
उनके संग न उतरिहा पार ॥

अर्थात ब्राह्मण का काला होना आश्चर्य की बात है, चमार जाति के लोग काले रंग के थे । समुद्र मंथन का नेतृत्व करने वाले असुर नेता जो काले रंग के थे, वे भी इसी चमार वर्ग के आदि मानव थे । महाभारत के 'अनुशासन पर्व' में चमारों का नाम चर्मकार, चर्मकृत, पादुकार, पादुकृत आदि का प्रयोग मिलता है । एक किवदंती के अनुसार देवयोनि जो गन्धर्वों में एक देवदासी थी, उसके गर्भ से जो वंशज हुए, वे चंवरकहलाए जो बाद में 'चमार' जाति कहे जाने लगे ।

पराशर ने चमार की उत्पत्ति चांडाली के गर्भ से बताई है जिसका समर्थन जी.डब्लयु. ब्रिग्स ने 1920 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द चमार' में भी किया है ।

निम्नलिखित गोत्रों से स्पष्ट होता है कि चारों वर्णों का आपसी संबंध था और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभी के गौत्र चमारों से ही निकले हैं । कुछ गोत्र एवं उनकी जातियाँ इस प्रकार हैं –

गोत्र	जाति एवं उनके नाम
भभोरिया	चमार, ब्राह्मण एवं गौड़
वसिष्ठ	चमार (जम्मू में), ब्राह्मण एवं मेघ
खंडेलवाल	चमार, ब्राह्मण, वैश्य, मेहतर,
झझोटिया	चमार, ब्राह्मण, गौड एवं भंगी
बावलिया	चमार एवं ब्राह्मण
चोपड़ा	चमार, क्षत्रिय एवं राजपूत
गोयला	चमार एवं वैश्य
खत्री	चमार एवं क्षत्रिय
सेंगल	चमार, वैश्य
ब्राहमिया	चमार एवं ब्राह्मण

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

***Corresponding Author:** किरण शर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.16637745

मायल	चमार एवं गूजर
चांदीला	चमार, गूजर तथा सुनार
बोयत	चमार, जात, धानक, भंगी
निब्रान	चमार तथा जाट
मेहता	चमार, ब्राह्मण एवं जात
बाहज	चमार एवं सुनार
सिंहमार	चमार, कुम्हार एवं जाट
दैया गढवाल	चमार एवं जाट
लांबा	चमार, क्षत्रिय एवं जाट
तूणीवाल	चमार एवं अहीर
आफरियाँ	चमार एवं अहीर
गोड	चमार, ब्राह्मण, राजपूत
गेहलोत	चमार तथा राजपूत
राठौर	चमार तथा राजपूत
भट्टी	चमार तथा राजपूत
सोलंकी	चमार तथा राजपूत
तंवर	चमार तथा राजपूत
चौहान	चमार तथा राजपूत
पनवार	चमार तथा राजपूत
हाडा	चमार तथा राजपूत
खेची	चमार तथा राजपूत
चायल	चमार तथा राजपूत
संखला आदि	चमार था राजपूत

इस से स्पष्ट है कि चमार का गोत्र सभी जतियों के साथ है और इससे चमार को विख्यात होने का प्राचीन गौरव प्राप्त है ।[1]

गुरु रविदास जी ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है –
"नागर जना मेरी जात विख्यात चमार"।

मध्य काल में शूद्रों एवं चमारों की स्थिति बहुत ही दयनीय, शोषित एवं कष्ट से परिपूर्ण थी । उसी समय गुरु रविदास ने जन्म लिया और इसी से भक्तिकाल का आरंभ हुआ । तभी इस समाज के लोगों को ऐसी स्थिति से बाहर निकालने के लिए गुरु रविदास जी ने कहा –

"पराधीन को दीन क्या पराधीन बेदीन ।
रविदास पराधीन कौ सबही समझै हीन ।।

अर्थात जो दूसरों का गुलाम है, उसका कोई धर्म नहीं होता । गुलाम को सभी छोटा एवं हीन समझते हैं - जिसका कोई धर्म नहीं होता, उसे सभी नीच समझते हैं।" [2]

"रविदसिया शब्द का अर्थ– जो गुरु रविदास जी के धर्म के ख्याल को मानता है, जो रविदास जी द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करता है ।"[3]

अंग्रेज़ी शाशन के दौरान जब 1848 में भारत के मूल निवासी बहुजनों की आज़ादी, ब्राह्मण जाति बंधन से मुक्ति का बीज ज्योतिवा राव फुले द्वारा बोया गया जिसे छत्रपति शाहू द्वारा सींचा गया और डॉ. अंबेडकर और पंजाब में बाबू मंगु राम की आदि धर्म लहर द्वारा पाला–पोसा गया । तब जाकर आधुनिक रविदसिया समाज की नींव रखी जा सकी थी।[4]

दलितों-शूद्रों की यह स्थिति अशिक्षा के कारण थी। आज यह समाज शिक्षित हो रहा है तो इस में अपनी स्थिति में सुधार लाने के लिए किए गए प्रयत्न तीव्र गति से बढें हैं । इसी प्रक्रिया में रविदासिया धर्म की घोषणा हुई ।

रविदासिया धर्म का अर्थ है – गुरु रविदास की विचारधारा का धर्म । गुरु रविदास के धर्म का अर्थ है – सत्य और ज्ञान का धर्म।[5]

आखिर रविदसिया समाज को अलग धर्म को बनाने की ज़रुरतक्यो पड़ी?

क्योंकि हिंदू धर्म जाति, वर्ण-व्यवस्थासे प्रताड़ितथा । अतः शूद्र ने हिंदू धर्म छोड़ा, वर्ण जाति से निजात पाने की कोशिश कीऔर अन्य धर्म को अपना लिया । कम से कम आज वहाँ तीस करोड़ शूद्र हैं, अछूत हैं, जो सदियों से धर्म परिवर्तनकरते रहे परन्तु आज़ादी और समानता

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

Sarc. Jr. Hum. Cul. Stud. vol-4, issue-2 (2025) pp-10-13

की बात वहीं की वहीं खड़ीरही । धर्म तो बदला मगर गुलामी नहीं बदली ।इसी प्रकार करोडों शूद्रों ने अलग-अलग धर्मों में प्रवेश किया मगर शूद्रों को कहीं भी बराबरी का अधिकार न मिला क्योंकि इस पर भी ऊंची जातियों ने कब्ज़ा जमा रखा है ।[6]

धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया से भी सदियों से इस वंचित समाज को कोई राहत नहीं मिली, सम्मान नहीं मिला । यह सम्मान का प्रश्न ही 'रविदासिया धर्म' की घोषणा का कारण बना |

रविदासिया धर्म का मूल उद्देश्य है - मानवीय आज़ादी का संकल्प, सम्मान की ज़िंदगी, सभी धर्मों का मान-सम्मान करना, मानवता से प्यार और सदाचार का जीवन व्यतीत करना।इन सभी उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए ही 'रविदासिया धर्म' की स्थापना हुईं । गुरु रविदास जी के बाद उनके विचार उनके अनुयायियों द्वारा देश-विदेश में प्रवाहमान हुए । रविदास जी की विचारधारा कभी व्यक्ति और कभी अनगिनत व्यक्ति समूहों के माध्यम से प्रसारित होती रही।

सन् 1604 में जब 'गुरु ग्रंथ साहिब' गुरु अर्जुन देव जी ने संकलित किया तब रविदास जी के 40 शबद और एक शलोक उसमें संकलित किए गए । गुरु ग्रंथ साहिब की यह वाणी प्रमाणित वाणी है जो गुरु रविदास जी की मृत्यु के काफ़ी बाद संकलित की गई । तब तक न जाने गुरु जी की कितनी वाणी नष्ट करदी गई होगी । पंजाब में गुरु रविदास की चर्चा एवं प्रसिद्धि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के कारण दिन व दिन बढ़ने लगी ।

सन् 1926 में दलितों की गरिमा के लिएबाबू मंगू राम मंगोवालिया ने 'आदि धर्म मंडल' की स्थापना की और हिन्दुओं एवं सिक्खों से अलग पहचान बनाई । उन्होंने अपने प्राचीन धर्म गुरुओं का भी सहारा लिया जिनमें गुरु रविदास, गुरु कबीर, गुरु दादू, गुरु पीपा प्रमुख थे ।

उसी समय 'आदि डंका' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र की भी शुरुआत की गई । दलितों की अस्मिता और आदि गुरुओं का प्रचार-प्रसार प्रारंभ कर दिया गया ।

आदि धर्मी 'जय आदि धर्म' और 'जय गुरुदेव' के नारे लगाने लगे । 15 मई 1931 को किशन स्टीम प्रेस, रेलवे रोड़, जालंधर से आदि धर्म रिपोर्ट प्रकाशित की गई । ''इसके अंतर्गत आदि धर्म मंडल के 10 बुनियादी सिद्धांतों का वर्णन-विश्लेषण है । आदि धर्म संगठन के कार्यकर्ताओं के लिए 12 कर्तव्यों का उल्लेख है तथा 56 धार्मिक आदेश हैं जिन्हें आदि धर्मियों को मानना था ।[7]

''आदि धर्म आंदोलन ने अधिकांश चमार या रविदसिया जाति के लोगों को ही अपने आंदोलन में आकर्षित किया था।''[8]

''ये लोग रविदास जी को आराध्य मानकर पूजते थे। आदि धर्म के सबसे बड़े नेता प्रारंभ से ही रविदासियों द्वारा संचालित डेरों में जाते थे ।''[9]

औरजब आदि धर्म में दरार आई तो 'आदि धर्म मंडल' धीरे-धीरे 'रविदासी मंडल' में बदल गया। इस पूरी प्रक्रिया में पंजाब राज्य में रविदास जी को पूरा-पूरा सम्मान दिया गया, 'जय गुरुदेव' नारे का उद्घोष शुरू हुआ और लोगों में दिन-प्रतिदिन अपने आप को गौरवान्वित करने के बढ़ते प्रयासों को अनुभव किया गया।

रविदसिया समाज का पादुर्भाव एवं विकास

वह व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को जो मरे हुए जानवरों को उठाने और व चमड़ा निकालने का कार्य करता है, जो खेतों में से गोबर व कूड़ा उठाने का काम करता था, जो तथा कथित मालिक के घर का अवशिष्ट, उच्छृष्ट भोजन खुद खाकर तथा अपने परिवार जनों को की भूख शांत करता था, जो शिक्षा के अधिकार से वंचित था, जिस के दुख-दर्द सुनने वाला कोई नहीं था, जिसे अपमानित और प्रताड़ित किया जाता था, उसे चमार जाति कहा जाता था ।

दलितों में रविदसिया समाज का स्थान

अगर भारत देश को जाति-प्रधान देश कहा जाए तो अतिकथनी होगी । इस देश में जातियों का ऐसा महाजाल बिछा हुआ है कि उसमें से निकाल पाना कठिन ही नहीं, असंभव है । व्यक्ति सफर कर रहा हो, कहीं पर नौकरी का रहा हो, उसके साथ कोई अच्छी-बुरी घटना घट गई हो अर्थात प्रत्येक कार्य के साथ व्यक्ति विशेष की जाति अवश्य पूछी जाती है । फिर जाति को आधार मान कर प्रश्नों का सिलसिला शुरू होता है । अगर उच्च जाति से संबंध रखते हो तो मान-सम्मान की झड़ी लग जाएगी और अगर दलित जाति के हो तो कह देंगे कि आप देखने से तो दलित जाति के नहीं लगते हो । देश-प्रदेश में पाई जाने वाली चमार जाति को अनुसूचित दलित जातियों का इतिहास पुराना है ।

आर्यों के आगमन से पहले इस देश में एक ऊंची नगर सभ्यता थी जिसे सिंधु घाटी के नाम से जाना जाता है । आर्यों ने अनार्यों से युहूद्ध किए जिसमें आर्यों की जीत हुई और अनार्यों को दास बना लिया गया । पराजित अनार्यों को तीन भागों में बाँट दिया गया । जिन्होंने आसानी से आर्यों की सत्ता को स्वीकार कर लिया, उन्हें 'अबहिष्कृत' शूद्र कहा गया । जिन जातियों ने बहुत

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

दिनों तक आर्यों से युद्ध किया, उन्हें 'बहिष्कृत' शूद्र कहा गया ।

बहिष्कृत शूद्रों में से जिनसे चमड़े का काम या मुर्दा पशु उठाने का काम दिया गया, उन्हें चमार कहा गया ।[10]
सद्गुरु रविदास महाराज जी के ज्योति-ज्योत समा जाने के बाद आप जी के मिशन को आगे बढ़ाने वालेबुद्धिजीवियों का अभाव रहा लेकिन आज भारत में बहुत से संत महापुरुष और जन-कल्याण संस्थाएँ हैं, जिन्होंने सतिगुरु जी की वाणी एवं उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। उनमें से कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं-

तीर्थ स्थल एवं आश्रम

1. गुरु रविदास जन्म स्थली – सीरगोवर्धनपुरा
2. काशी मंदिर
3. अयोध्या
4. प्रयाग (इलाहाबाद)
5. गोरखपुर
6. बस्ती
7. चित्रकूट
8. सागर
9. कानपुर
10. हरदोई
11. जालौन
12. फरुखाबाद
13. मिर्जापुर
14. जमुड़ी
15. राजघाट
16. लोटा वीर
17. बापी मस्जिद
18. गुरु का बाग
19. कबीर चौरा
20. चरण पादुका
21. श्री गुरु रविदास कुण्ड
22. वर्ल्ड पीस टैंपल
23.खुराली
24. चक्क हकीम फगवाड़ा
25. संतघाट गुरुद्वारा

पाद-टिप्पणी

1. आदिम जाति चमार-इतिहास, धर्म व संस्कृति, संपादक - डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, पृष्ठ - 24
2. आदिग्रंथ, पन्ना-1293
3. अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी, पृ. - 173
4. रविदसिया धर्म चिंतन एवं हरि का निशान, प्रो.गुरनाम सिंह मुक्तसर पृ. - 13
5. रविदसिया धर्म चिंतन, प्रो. गुरनाम सिन्ह मुक्तसर,पृ. - 41
6. रविदसिया धर्म चिंतन, प्रो. गुरनाम सिन्ह मुक्तसर पृ. - 87
7. रविदसिया धर्म चिंतन, प्रो. गुरनाम सिन्ह मुक्तसर,पृ. - 101
8. बाबू मंगुराम और आदि धर्म मण्डल आंदोलन, सूरज बड़गपा, पृ.- 58
9. बाबू मंगुराम और आदि धर्म मण्डल आंदोलन, सूरज बड़गपा, पृ.- 56
10. आदिम जाति चमार – इतिहास, धर्म व संस्कृति, संपादक – डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, पृष्ठ – 228

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
किरण शर्मा, " रविदसिया समाज का ऐतिहासिक अध्ययन." *Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies* 4.2 (2025): pp 10-13.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher